

पाठ 3 - संवादहीन (शेखर जोशी)

प्रश्न-उत्तर

रचना से संवाद

1. कहानी में ताई और मिट्टू का संबंध किस भाव को दर्शाता है?

(क) परोपकार और त्याग

(ख) ममता और स्नेह

(ग) करुणा और क्रोध

(घ) जिज्ञासा और सहायता

- **उपयुक्तता का तर्क:** ताई अपने बहू-बेटों के जाने के बाद पूरी तरह अकेली थीं। मिट्टू के आने के बाद उन्होंने अपनी संतान की तरह उस पर स्नेह बरसाया, उसके लिए नियम से भोजन बनाया और अपनी सुख-दुख की बातें साझा कीं। इसलिए यह संबंध शुद्ध ममता और आत्मीय स्नेह का प्रतीक है।

2. जगन मास्टर द्वारा मिट्टू को पिंजरे से बाहर निकालना किस भावना या मूल्य का संकेत देता है?

(क) अनुशासन और परंपरा

(ख) उदासीनता और असावधानी

(ग) आत्मगौरव और विद्रोह

(घ) करुणा और नैतिकता

- **उपयुक्तता का तर्क:** जगन मास्टर स्वतंत्र और आदर्शवादी विचारों के व्यक्ति थे। किसी बेजुबान पक्षी को सलाखों के पीछे बंद देखना उनकी नैतिक चेतना को स्वीकार नहीं था। उन्होंने तोते के प्रति गहरी करुणा और जीव-दया की भावना के वशीभूत होकर ही पिंजरे का दरवाजा खोला था।

3. मिट्टू का उड़ जाना किस विचार को प्रस्तुत करता है?

(क) भोजन की खोज

(ख) प्रेम की आकांक्षा

(ग) स्वतंत्रता की चाह

(घ) पक्षियों में सम्मान की प्रवृत्ति

- **उपयुक्तता का तर्क:** तोता भले ही ताई से कितना भी स्नेही था, परंतु मूल रूप से वह एक आकाश का स्वतंत्र पक्षी था। जैसे ही उसे खुला रोशनदान और बाहर का खुला आसमान दिखाई दिया, उसकी प्राकृतिक स्वतंत्रता की चाह जाग उठी और वह उड़ गया। यह सिद्ध करता है कि पराधीनता में चाहे कितना भी सुख मिले, स्वतंत्रता सर्वोपरि है।

4. ताई के जीवन के दुख का मुख्य कारण क्या था?

(क) सम्मान और प्रतिष्ठा में कमी आना

(ख) परिवार से दूरी और संवाद का अभाव

(ग) आर्थिक विपन्नता और निर्धनता

(घ) मिट्टू के प्रति प्रेम और संवाद

- **उपयुक्तता का तर्क:** ताई के पास खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी, न ही वे गरीब थीं। उनके दुख का वास्तविक कारण उनके बहू-बेटों का गाँव छोड़कर शहर चले जाना था, जिसके कारण वे उस विशाल पैतृक मकान में बिल्कुल अकेली रह गई थीं और उनके जीवन से बात करने वाला 'संवाद' गायब हो गया था।

5. कहानी में मानव-समाज में व्याप्त किस विसंगति को उजागर किया गया है?

(क) मजबूरी

(ख) कर्मपरायणता

(ग) अकेलापन

(घ) संवादधर्मिता

- **उपयुक्तता का तर्क:** यह कहानी आधुनिक समाज की उस कड़वी विसंगति को उजागर करती है जहाँ रोज़गार और आधुनिकता की होड़ में युवा पीढ़ी बुजुर्गों को गाँवों में अकेला छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर जाती है, जिससे बुजुर्ग एकाकीपन और अवसाद का जीवन जीने को विवश होते हैं।

मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न 1. "भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?" ताई इस वाक्य में किस 'नैया' की बात कर रही हैं? वे यह बात क्यों कह रही हैं?

- **उत्तर:** ताई यहाँ किसी भौतिक नाव की नहीं, बल्कि अपने '**जीवन रूपी नैया**' की बात कर रही हैं। वे ऐसा इसलिए कह रही हैं क्योंकि बुढ़ापे के इस अंतिम पड़ाव में वे पूरी तरह एकाकी और असहाय हो चुकी हैं। उनके सारे सगे-संबंधी और बच्चे उन्हें छोड़कर जा चुके हैं। उस विशाल सूनू घर का भयानक सन्नाटा उन्हें डराता है, इसलिए वे अत्यधिक हताशा और मानसिक अवसाद में ईश्वर से गुहार लगाते हुए अपने शेष जीवन को काटने की चिंता व्यक्त करती हैं।

प्रश्न 2. "धीरे-धीरे सब पराए हाथ में चला गया।" इस वाक्य में किस घटना की ओर संकेत किया गया है?

- **उत्तर:** इस वाक्य में ताई के परिवार के **वैभव के पतन और विघटन** की घटना की ओर संकेत किया गया है। जब ताई के बेटे और बहुएँ गाँव का मोह छोड़कर स्थायी रूप से शहरों के वासी हो गए, तो गाँव की जमींदारी, खेती-बाड़ी और पुराना कारबार सँभालने वाला कोई नहीं रहा। देखरेख के अभाव में धीरे-धीरे पूरी संपत्ति, ज़मीन-जायदाद और कारबार दूसरों या पराए लोगों के नियंत्रण में चला गया और नौकर-चाकर भी घर छोड़कर चले गए।

प्रश्न 3. "ताई की सारी ममता मिट्टू पर बरस पड़ी।" क्यों?

- **उत्तर:** मनुष्य का स्वभाव है कि उसे जीवित रहने के लिए भावनात्मक सहारे और आत्मीय संवाद की आवश्यकता होती है। ताई का भरा-पूरा परिवार उनसे दूर हो चुका था, जिससे उनके भीतर का वात्सल्य और

माँ की ममता पूरी तरह कुंठित और अकेली थी। जब गनपत उनके सूनेपन को दूर करने के लिए तोता (मिट्टू) लेकर आया, तो ताई को अपने जीवन का एक उद्देश्य और बात करने का साथी मिल गया। अपनी इसी दबी हुई अगाध संतान-भावना और वात्सल्य को उन्होंने पूरी तरह मिट्टू पर केंद्रित कर दिया।

प्रश्न 4. "अब ताई को इस बात की पूरी जानकारी रहने लगी थी कि किसके खेत में हरी मिर्चें तैयार हो गई हैं और किस पेड़ में फसल के आखिरी अमरूद बचे हैं।" इस वाक्य द्वारा ताई के व्यक्तित्व में आए परिवर्तनों के विषय में क्या-क्या पता चलता है?

- **उत्तर:** इस वाक्य से ताई के व्यक्तित्व में आए निम्नलिखित सकारात्मक और बड़े परिवर्तनों का पता चलता है:
 1. **सक्रियता और उत्साह का पुनरागमन:** जो ताई पहले अकेलेपन के कारण अवसाद में थीं और स्वयं के लिए चूल्हा जलाने में भी आलस्य करती थीं, वे अब मिट्टू के प्रेम में पूरी तरह सक्रिय और ऊर्जावान हो गईं।
 2. **प्रकृति और परिवेश से जुड़ाव:** मिट्टू की पसंद (हरी मिर्च और अमरूद) के कारण ताई अपने घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर गाँव के खेतों, बाग-बगीचों और आस-पास के वातावरण में रुचि लेने लगीं, जिससे उनका एकाकीपन दूर हुआ।

प्रश्न 5. "जगन... मास्टर दूसरे मिजाज के आदमी थे।" जगन मास्टर का व्यक्तित्व कैसा था? कहानी में से उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

- **उत्तर:** जगन मास्टर स्वतंत्र, दृढ़ सिद्धांतों वाले, संवेदनशील और परम आदर्शवादी व्यक्ति थे। वे किसी भी जीव पर अन्याय करना या उसकी स्वतंत्रता का हनन करना अपने सिद्धांतों के खिलाफ मानते थे।
 - **उदाहरण:** पिंजरे में बंद तोते को देखकर उनका हृदय ग्लानि और यातना से भर जाता था। अपनी इसी उच्च नैतिक चेतना और जीव-दया के कारण उन्होंने ताई के क्रोध की परवाह किए बिना, स्वयं को पापी होने से बचाने के लिए कमरा बंद करके मिट्टू के पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया ताकि वह आज़ाद हो सके।

प्रश्न 6. कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' किसके लिए सबसे अधिक सार्थक प्रतीत होता है- ताई, जगन मास्टर, मिट्टू या नया तोता? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

- **उत्तर:** कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' सबसे अधिक **ताई और नए तोते के मध्य उत्पन्न हुई स्थिति** तथा व्यापक रूप से **वृद्ध ताई के संपूर्ण जीवन** के लिए सार्थक है।
 - **कारण:** मिट्टू ताई के जीवन में संवाद का एकमात्र जरिया था जिसके उड़ जाने से ताई पुनः अकेली हो जाती हैं। अंत में जब ताई बड़े चाव से लौटकर पिंजरे के पास जाती हैं, तो नया तोता उनकी भाषा और स्नेह से पूरी तरह अनभिज्ञ होने के कारण मौन रहता है। ताई की तमाम कोशिशों के बाद भी उस नए तोते से कोई उत्तर नहीं मिलता। वह आत्मीय बातचीत हमेशा के लिए ठप हो जाती है, जो ताई के जीवन के अंतिम संवाद-स्रोत के समाप्त होने का द्योतक है।

प्रश्न 7. "अब ये ही दो प्राणी गाँव के बीच में स्थित बड़े घर के उस सूने खंडहर में एक-दूसरे को सहारा देने के लिए रह गए थे।" ताई के बड़े से घर को सूना खंडहर क्यों कहा गया होगा?

- **उत्तर:** ताई का घर भौतिक रूप से बहुत बड़ा और हवेली जैसा था, जहाँ कभी भरा-पूरा परिवार और भारी कोलाहल रहता था। परंतु अब सभी सदस्यों के पलायन कर जाने के कारण वहाँ कोई इंसानी आवाज़ या चहल-पहल नहीं बची थी। बिना रख-रखाव, बिना आत्मीय जनों और केवल एक वृद्ध स्त्री के रहने के कारण वह विशाल भवन अपनी जीवंतता खो चुका था। वह केवल ईंट-पत्थरों का एक ढाँचा मात्र रह गया था जो देखने में किसी वीरान खंडहर जैसा डरावना और सूना प्रतीत होता था।

मेरे प्रश्न

दिए गए उत्तरों के लिए सबसे उपयुक्त प्रश्नों का चयन:

1. **उत्तर :** ताई के अकेलेपन को मिटू ने सहारा दिया।
उपयुक्त प्रश्न (क) : ताई के सूनेपन को किसने सहारा दिया था?
2. **उत्तर :** ताई के लौटने से पहले मिट्टू उड़ गया था।
उपयुक्त प्रश्न (ख) : ताई के प्रयागराज से लौटने से पहले क्या अनहोनी हुई?
3. **उत्तर :** काँववालों को डर था कि ताई को सच्चाई जानकर सदमा लगेगा।
उपयुक्त प्रश्न (क) : गाँववाले ताई की वापसी से क्यों चिंतित थे?
4. **उत्तर :** कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' जीवन के मौन का प्रतीक है।
उपयुक्त प्रश्न (ख) : शीर्षक 'संवादहीन' का क्या भावार्थ है?

मेरे अनुभव मेरे विचार

प्रश्न 1. "कभी-कभार गाँव में थोड़ी देर के लिए भी न्यौते-बुलावे में जातीं, तो दस बार खिड़की-दरवाजों की साँकलें टोहकर देखतीं..." ताई की तरह जब आप अपने घर या परिवार से दूर होते हैं, तो किसी वस्तु या व्यक्ति की चिंता आपको भीतर से कैसे परेशान करती है?

- **उत्तर:** जब मैं अपने घर या प्रियजनों से दूर किसी यात्रा या परीक्षा के लिए जाता हूँ, तो मेरे मन में भी अपने घर की सुरक्षा, पालतू पशुओं या माता-पिता के स्वास्थ्य को लेकर एक अनजाना डर और गहरी चिंता बनी रहती है। बार-बार ध्यान इसी बात पर जाता है कि "क्या मैंने कमरे का मुख्य ताला ठीक से लगाया था? क्या घर के पालतू डॉगी को समय पर खाना मिला होगा?" यह चिंता मनुष्य की उस गहरी आत्मीयता और जिम्मेदारी की भावना के कारण होती है जो उसे अपनी प्रिय वस्तुओं से जोड़कर रखती है, जिससे वह दूर रहकर भी मानसिक रूप से वहीं अटका रहता है।

प्रश्न 2. "आखिर वह भी तो बोलता-बतियाता प्राणी है।" क्या आप मानते हैं कि पशु-पक्षियों में भी संवेदनाएँ होती हैं? अपने किसी अनुभव का वर्णन करते हुए लिखिए।

- **उत्तर:** हाँ, मैं पूरी तरह मानता हूँ कि पशु-पक्षियों में भी इंसानों जैसी ही गहरी भावनाएँ, दुख, सुख और संवेदनाएँ होती हैं।

- **मेरा व्यक्तिगत अनुभव:** मेरे घर में एक पालतू कुत्ता (लैब्राडोर) है जिसका नाम 'मैक्स' है। पिछले वर्ष जब मेरी दादी जी अत्यंत बीमार होकर अस्पताल में भर्ती हुई थीं, तो मैक्स ने तीन दिनों तक नाँद में मुँह नहीं डाला और मुख्य दरवाजे पर सिर लटकाकर उदास बैठा रहा। जब दादी जी ठीक होकर घर आईं, तो वह खुशी से उछलने लगा और उनका हाथ चाटने लगा। पशुओं का यह निश्छल व्यवहार सिद्ध करता है कि वे भाषा न जानते हुए भी मूक संवेदनाओं के धनी होते हैं।

प्रश्न 3. "गनपत ने ही एक सुझाव दिया कि मिठू की ही सूरत-शकल का एक दूसरा तोता ले आया जाए ताकि ताई को भ्रम में रखा जा सके..." ताई को भ्रम में रखना उचित था या नहीं? तर्क सहित अपने विचार लिखिए।

- **उत्तर:** व्यावहारिक और तात्कालिक दृष्टिकोण से गनपत का ताई को भ्रम में रखने का प्रयास उचित प्रतीत होता है, क्योंकि ताई वृद्ध थीं और मिठू उनके जीने का एकमात्र सहारा था। मिठू के अचानक उड़ जाने का सच यदि उन्हें एकाएक बताया जाता, तो उनके वृद्ध हृदय को गहरा सदमा लग सकता था जो उनके स्वास्थ्य के लिए घातक होता। परंतु दीर्घकालिक रूप से किसी को धोखे या भ्रम में रखना सही नहीं है, क्योंकि अंततः सच सामने आ ही जाता है, जैसा कि कहानी के अंत में नए तोते के मौन रहने से ताई को सच का आभास स्वतः ही हो गया।

प्रश्न 4. "ताई सोच रही थीं कि उन्हें देखते ही मिठू 'राम राम सीताराम' की रट लगाकर आसमान सिर पर उठा लेगा।" क्या कभी ऐसा हुआ कि आपने सोचा कुछ और, हुआ कुछ और? उस अनुभव को लिखिए।

- **उत्तर:** हाँ, मेरे साथ ऐसा अनुभव मेरे पिछले जन्मदिवस पर हुआ था। मुझे पूरा विश्वास था कि रात के बारह बजते ही मेरे सभी विद्यालय के मित्र मेरे घर आकर मुझे बड़ा सरप्राइज देंगे और केक काटेंगे। मैंने उनके स्वागत की पूरी तैयारी मन ही मन कर रखी थी। परंतु रात को बारह बजे किसी का न तो फोन आया और न ही कोई घर आया; सब तरफ सन्नाटा रहा। मैं बहुत उदास होकर सो गया। अगले दिन सुबह जब मैं स्कूल पहुँचा, तो मेरे सभी मित्रों ने पूरे क्लासरूम को गुब्बारों से सजा रखा था और शिक्षकों के साथ मिलकर मेरा भव्य स्वागत किया। तब मुझे अहसास हुआ कि कभी-कभी जो हम तात्कालिक सोचते हैं, हकीकत उससे बिल्कुल अलग और अप्रत्याशित होती है।

प्रश्न 5. "मिठू अब पिंजरे में रहने के इतने आदी हो चुके थे कि उन्होंने बाहर आने की कोई इच्छा नहीं प्रकट की।" क्या प्राणी सचमुच पिंजरे में रहने के आदी हो सकते हैं? अपने उत्तर के समर्थन में अपने आस-पास से उदाहरण भी दीजिए।

- **उत्तर:** हाँ, जब किसी स्वतंत्र वन्य जीव या पक्षी को जन्म से ही या बहुत लंबे समय तक एक सीमित दायरे (पिंजरे) में बंद रखा जाता है, तो वह अपनी प्राकृतिक उड़ान, शिकार करने की प्रवृत्ति और बाहरी दुनिया के संघर्षों को धीरे-धीरे भूल जाता है। वह पिंजरे की सुरक्षित और बिना मेहनत के भोजन मिलने वाली कृत्रिम दुनिया को ही अपना संपूर्ण संसार मानकर उसका '**मानसिक आदी**' हो जाता है।
 - **आस-पास का उदाहरण:** हमारे पड़ोसी के घर में पिछले पाँच वर्षों से एक सुगा (तोता) पिंजरे में बंद है। एक बार सफ़ाई करते समय पिंजरे का दरवाज़ा खुला रह गया और वह बाहर निकलकर आँगन के अमरूद के पेड़ पर बैठ गया। परंतु दस मिनट बाद ही कौवे के काँय-काँय करने से डरकर वह स्वतः

वापस उड़कर अपने सुरक्षित पिंजरे के भीतर घुस गया। यह दर्शाता है कि पराधीनता की आदत जीव के मूल साहसी स्वभाव को नष्ट कर देती है।

विधा से संवाद - कहानी का सौंदर्य

पाठ्यपुस्तक के मानदंडों के अनुसार कहानी की साहित्यिक एवं कलात्मक विशेषताओं को दर्शाने वाली पूर्ण विवरण तालिका नीचे दी गई है:

विशेष बिंदु	विशेषता का अर्थ	पाठ से प्रामाणिक उदाहरण
चित्रात्मकता (दृश्य बिंब)	शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में स्पष्ट और जीवंत चित्र या छवियाँ बनाना।	"मिट्टू एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर अपने पंख तौलने में मशगूल रहे।"
संवादात्मकता	कथ्य को आगे बढ़ाने के लिए पात्रों के विचार और भाव बातचीत के माध्यम से व्यक्त करना।	"गहरी साँस लेकर ताई कहती, 'भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?' और बंद पिंजड़े में अपने पंख फड़फड़ाता मिट्टू उत्तर देता, 'राम-राम कहो, सीताराम कहो।'"
पुनरुक्ति	शब्दों की बार-बार पुनरावृत्ति करके भाव या संदेश की तीव्रता को बढ़ाना।	"कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!" अथवा "मर जा! मर जा! मर जा!"
अतिशयोक्ति	किसी पात्र, घटना या वस्तु का वर्णन इतना बढ़ाकर करना कि वह असंभव या अविश्वसनीय लगे।	"रेलगाड़ी में उसका भी टिकट लगेगा, आखिर वह भी तो बोलता-बतियाता प्राणी है।"
लोकधर्मी भाषा	ग्रामीण, सहज और आम बोलचाल के प्रांतीय शब्दों का सजीव प्रयोग।	"अपनी अकेली जान के लिए ताई दो जून का एक जून चूल्हा फूँक लेतीं, व्रत-उपवास के बहाने चौका-चूल्हा टाल जातीं।"
प्रश्नोत्तर शैली	संवाद को अधिक जीवंत और खोजी बनाने के लिए पात्रों द्वारा प्रश्न पूछना।	"काम-काज से थककर ताई जब कभी पिंजरे को बगल में रखकर सुस्ताने लगतीं तो अनायास ही मिट्टू से सवाल कर बैठतीं, 'मिट्टू! अब कैसे कटेगी?'"

कहानी का अंत और नव-लेखन

प्रश्न 1. आपके अनुसार 'संवादहीन' कहानी के अंत को किस श्रेणी में रखा जा सकता है? अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

- उत्तर: मेरे अनुसार 'संवादहीन' कहानी के अंत को 'यथार्थवादी अंत' (Realistic Ending) और आंशिक रूप से 'दुखांत' (Tragic Ending) की श्रेणी में रखा जाना चाहिए।
 - कारण: लेखक ने आज के महानगरीय दौर में ग्रामीण अंचलों में अकेले रह रहे बुजुर्गों के जीवन के कड़वे और निर्दयी सच को बिना किसी कृत्रिम सुखांत के हुबहू प्रस्तुत किया है। ताई का आत्मीय तोता उड़ जाता है और नया तोता मूक बना रहता है, जो यह दर्शाता है कि जीवन में खोया हुआ

संवाद और अपनेपन का स्थान कृत्रिम विकल्प कभी नहीं ले सकते। यह अंत पाठक के मन में गहरी करुणा और सोचने के लिए एक गंभीर धरातल छोड़ जाता है।

कहानी का नया कल्पनाशील अंत (Creative Alternative Ending)

(संकेत के अनुसार: "एक दिन आकाश में वही हरे पंख चमके...")

ताई उदास मन से पिंजरे के पास बैठी थीं और वह नया तोता पत्थर की मूर्त बना बैठा था। ताई की आँखों से आँसू टपक रहे थे कि अचानक एक दिन आकाश में वही गहरे हरे पंख चमके... और पूरा आँगन एक परिचित तीखी आवाज़ से गूँज उठा—"हर-हर गंगे! ताई राम-राम!" ताई ने चौंककर ऊपर देखा; उनका अपना प्यारा मिट्टू आज़ाद आकाश की सैर करके, अपने कुछ जंगली तोते मित्रों के साथ वापस उनके अमरूद के पेड़ पर आकर बैठ गया था। मिट्टू पिंजरे के भीतर बंद नए तोते को देखकर अपनी गर्दन टेढ़ी करके बोला—"खोल दो! इसे भी खोल दो! आज़ाद दुनिया सुहावनी है!" ताई के बहते आँसू खुशी में बदल गए। उन्होंने तुरंत आगे बढ़कर पिंजरे का दरवाज़ा हमेशा के लिए खोल दिया। वह नया तोता भी आज़ाद होकर मिट्टू के साथ उड़ गया। अब मिट्टू पिंजरे का कैदी नहीं, बल्कि ताई के आँगन का एक स्वतंत्र मुफ्त पहरेदार बन चुका था जो रोज़ शाम को अपनी पूरी टोली के साथ ताई की अमराइयों में आकर बैठता और ताई का जीवन दोबारा आत्मीय संवादों से गुलज़ार हो जाता।

विषयों से संवाद

प्रश्न 1. "अंत में जगन मास्टर की घरवाली ने उनकी चिंता दूर कर दी।" कहानी में रेखांकित पात्र का नाम नहीं दिया गया है। इसे कहीं 'मास्टराइन', तो कहीं 'जगन मास्टर की घरवाली' कहा गया है। आपके अनुसार कहानी में ऐसा क्यों किया गया होगा?

- **उत्तर:** मुंशी प्रेमचंद और शेखर जोशी जैसे प्रगतिशील कहानीकारों ने तत्कालीन ग्रामीण भारतीय समाज के यथार्थ को दर्शाने के लिए ऐसा किया है। हमारे पारंपरिक ग्रामीण परिवेश में स्त्रियों की पहचान स्वावलंबन के बजाय उनके पति के नाम, पद या पेशे से तय होती थी (जैसे- मास्टर की पत्नी होने के नाते 'मास्टराइन')। लेखक ने इस भाषाई व्यवस्था का प्रयोग करके समाज में स्त्रियों की व्यक्तिगत पहचान के अभाव और पितृसत्तात्मक सामाजिक ढाँचे पर परोक्ष रूप से गहरा सामाजिक व्यंग्य किया है।

प्रश्न 2 (क). 'कुंभ-स्नान' एक सुप्रसिद्ध आयोजन है जिसमें करोड़ों लोग भाग लेते हैं। पता लगाइए कि इसका आयोजन क्यों किया जाता है? पिछली बार और अगली बार यह कब और कहाँ हुआ/होगा?

- **उत्तर:**
 - **आयोजन का कारण:** सनातन हिंदू संस्कृति के अनुसार समुद्र मंथन के समय निकले अमृत कलश से अमृत की कुछ बूँदें पृथ्वी के चार पवित्र स्थानों पर गिरी थीं। ग्रहों और राशियों के विशेष योग पर इन पवित्र नदियों में स्नान करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।
 - **पिछला महाकुंभ:** सन् 2013 और अर्धकुंभ सन् 2019 में प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में त्रिवेणी संगम पर आयोजित हुआ था।

- **अगला महाकुंभ:** आगामी सन् 2025-2026 में प्रयागराज में भव्य रूप से आयोजित हो रहा है, जहाँ देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु आ रहे हैं।

(ख) ताई की प्रयागराज कुंभ-स्नान यात्रा का यात्रा-वृत्तांत

लमही और अड़ोस-पड़ोस के गाँव के बुजुर्गों का एक पूरा दल इस बार प्रयागराज महाकुंभ के लिए तैयार हुआ था। ताई ने अपनी पोटली में कुछ सत्तू, गुड़ और गंगाजली रखी। सुबह तड़के सभी लोग 'हर-हर गंगे' के जयकारे लगाते हुए बैलगाड़ियों से मुख्य रेलवे स्टेशन पहुँचे। स्टेशन पर भारी भीड़ और कोलाहल था। जगन मास्टर ने सभी के लिए रेलगाड़ी के तीसरे दर्जे का टिकट पहले ही ले लिया था। ट्रेन जैसे ही छुक-छुक करती हुई स्टेशन पर आई, ताई अपने संगी-साथियों के साथ संभलकर भीतर बैठ गईं। यात्रा के दौरान सहयात्रियों ने घर से लाया हुआ बाटी-चोकर आपस में मिल-बांटकर खाया। इलाहाबाद (प्रयागराज) पहुँचकर उन्होंने त्रिवेणी संगम के विशाल रेतीले मैदान में बने तंबू (शिविर) में शरण ली। कड़ाके की ठंड में ताई ने मूक मंत्रोच्चार के साथ पवित्र त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाई, दीप-दान किया और परलोक की चिंता से मुक्त होकर असीम शांति पाई।

(ग) हमारे स्थानीय 'कार्तिक मेले' का पाँच ज्ञानेंद्रियों के आधार पर सजीव वर्णन

वर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर एक विशाल नदी-तट मेला लगता है, जिसका अनुभव पाँचों ज्ञानेंद्रियों को पूरी तरह जाग्रत कर देता है:

1. **दृष्टि (आँखें):** चारों ओर घूमते हुए विशालकाय आसमानी झूले, रंग-बिरंगी टिमटिमाती लाइटें, मिट्टी के सुंदर बर्तनों की दुकानें और पारंपरिक परिधानों में सजे ग्रामीणों की अपार भीड़ का एक रंगीन कैनवास दिखाई देता है।
2. **श्रवण (कान):** बच्चों के भोंपू की पीं-पीं, झूलों की गड़गड़ाहट, लाउडस्पीकर पर बजते लोकगीत, सर्कस के मौत के कुएँ का गूँजता हुआ मोटरसाइकिल का शोर और दुकानदारों की ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें कानों में गूँजती हैं।
3. **घ्राण (नाक):** कड़ाही में उबलते शुद्ध देसी घी के गमागमाते हलवे और जलेबियों की भीनी खुशबू, गन्ने के ताज़ा रस और चाट-पकोड़े के तीखे मसालों की महक हवा में तैरती रहती है।
4. **रसना / स्वाद (जीभ):** मेले की पारंपरिक गर्मागर्म कुरकुरी चाट, खट्टी-मीठी सोंठ वाली टिकिया और अंत में मिलने वाली मलाईदार कुल्फी का स्वाद जीभ पर हमेशा के लिए अमर हो जाता है।
5. **स्पर्श (त्वचा):** मेले की ठंडी रातों में गुनगुनी धूप का अहसास, ऊनी शॉल की गर्माहट, भीड़ में एक-दूसरे से टकराते हुए कंधों का रगड़ और हस्तशिल्प की लकड़ी के खिलौनों की खुरदरी बनावट का स्पर्श महसूस होता है।

सृजन

प्रश्न 1. "बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए।" ताई के बहू-बेटों ने गाँव क्यों छोड़ा होगा और छोड़ते समय क्या सोचा होगा?

- **उत्तर: गाँव छोड़ने के कारण:** आधुनिक युग में गाँवों में उच्च शिक्षा, बेहतर चिकित्सा सुविधाओं, उद्योगों और रोजगार के अवसरों का अभाव होता है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए युवाओं को भारी मन से शहरों की ओर पलायन करना पड़ता है।
 - **मानसिक स्थिति (सोच):** गाँव छोड़ते समय उनके मन में अपनी वृद्ध माँ (ताई) को अकेला छोड़ने का गहरा अपराध-बोध और पैतृक मकान (बड़े घर) से बिछड़ने का तीव्र दुख रहा होगा। उन्होंने स्वयं को यह कहकर तैयार किया होगा कि "शहर में पैर जमते ही वे माँ को भी अपने पास बुला लेंगे," परंतु शहरी आपाधापी में वे धीरे-धीरे पूरी तरह वहीं के होकर रह गए।

प्रश्न 2. कल्पना कीजिए कि एक दिन असली मिट्टू वापस आ गया। मिट्टू ने नए तोते को देखकर क्या कहा होगा? आगे की कहानी लिखिए।

कहानी का नया विस्तार (असली मिट्टू की वापसी)

- **प्रारंभिक पंक्ति:** "एक दिन आकाश में वही हरे पंख चमके..."
- **आगे की कहानी:** ...और पूरा बड़े घर का सूना आँगन एक जानी-पहचानी तीखी चहचहाहट से गूँज उठा! ताई ने अचकचाकर ऊपर देखा; उनका अपना पुराना आत्मीय मिट्टू आज़ाद गगन की सैर करके वापस अपनी प्रिय देहरी पर लौट आया था। मिट्टू ने पिंजरे के भीतर गुमसुम बैठे उस 'एवजी तोते' (नए तोते) को देखा, अपनी गर्दन टेढ़ी की और बोला—"राम-राम सीताराम! इसे भी खोल दो! इसे भी खोल दो!" नए तोते ने जब अपने भाई की आवाज़ सुनी, तो उसने भी पहली बार खुशी में अपने पंख फड़फड़ाए। ताई की आँखों से वात्सल्य की अश्रुधारा बह निकली। उन्होंने तुरंत आगे बढ़कर पिंजरे का दरवाज़ा हमेशा के लिए खोल दिया। नया तोता आज़ाद होकर मिट्टू के साथ आकाश में उड़ गया, पर मिट्टू ताई का साथ छोड़कर कहीं नहीं गया। वह रोज़ सुबह-शाम आज़ाद पंखों से उड़कर ताई के कंधे पर आ बैठता और उनका जीवन दोबारा मधुर संवादों से गुलज़ार हो जाता।

प्रश्न 3. बुजुर्गों से बातचीत और उनके अनुभव का आलेख

- **संवाद सारांश:** मैंने आज अपने दादा जी से बात की और उनसे पूछा कि जब वे मेरी आयु (१४ वर्ष) के थे, तब अपना समय कैसे बिताते थे। दादा जी ने मुस्कराकर बताया कि उनके बचपन के दिन आज के तकनीकी युग से बिल्कुल अलग और सामूहिक आत्मीयता से भरे थे।
- **मुख्य अनुभव:**
 - **खेलकूद:** वे आज के बच्चों की तरह मोबाइल या कंप्यूटर गेम नहीं खेलते थे, बल्कि शाम होते ही गाँव के मैदान में मित्रों के साथ गिल्ली-डंडा, कबड्डी, खो-खो और छुपन-छुपाई जैसे शारीरिक खेल खेला करते थे।
 - **समय बिताने के साधन:** बिजली न होने के कारण रात को लालटेन की रोशनी में पूरा परिवार एक साथ बैठता था। दादा जी अपने दादा-दादी से पौराणिक और ऐतिहासिक कहानियाँ सुना करते थे, जिससे मनोरंजन के साथ-साथ नैतिक मूल्य भी मिलते थे।

- **प्रकृति से जुड़ाव:** गर्मियों की दोपहर में वे आम के बागों (अमराइयों) में जाकर पेड़ों पर चढ़ते थे और ताजे फल तोड़कर खाते थे। उनके समय में संवादहीनता नहीं थी, हर घर का दरवाज़ा एक-दूसरे के लिए खुला रहता था।

प्रश्न 4. जगन मास्टर द्वारा तोते की खोज हेतु 'तलाश विज्ञापन'

■ तलाश विज्ञापन: गुमशुदा तोते की खोज

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम लमही के 'बड़े घर' का एक पालतू पहाड़ी तोता (नाम- मिट्टू) दिनांक २२ मई २०२६ को दोपहर जगन मास्टर के मकान के रोशनदान से अनपेक्षित रूप से उड़ गया है।

तोते के मुख्य पहचान चिन्ह:

- **शारीरिक बनावट:** गाढ़ा हरा रंग, लाल चोंच और गर्दन पर हल्की सुर्खी वाली कंठी।
- **विशिष्ट बोलचाल:** मनुष्यों की तरह हु-ब-हू 'हर-हर गंगे', 'राम-राम', 'सीताराम' साफ़ आवाज़ में बोलता है।
- **विशेष हरकत:** बात सुनते समय अपनी गर्दन को टेढ़ी करके ध्यान से सुनता है।

यह तोता कुंभ-स्नान पर गई एक वृद्ध और एकाकी ताई के जीवन का एकमात्र सहारा है। तोते के गायब होने से पूरा परिवार और ताई अत्यंत व्याकुल हैं। यदि यह तोता किसी सहृदय व्यक्ति को आस-पास के बाग-बगीचों या पेड़ों पर दिखाई दे, तो कृपया उसे सुरक्षित पकड़कर नीचे दिए गए पते पर सूचित करें। जानकारी देने वाले या तोते को सकुशल पहुँचाने वाले को उचित नकद पुरस्कार दिया जाएगा।

संपर्क करें: जगन मास्टर (शिक्षक), मुख्य मार्ग, लमही गाँवा

भाषा से संवाद

1. आप कुछ ऐसे मुहावरों की सची बनाइए जिनमें किसी अन्य जीव-जंतु का उल्लेख किया गया हो।

जीव-जंतुओं पर आधारित मुहावरे

1. **अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनना:** (अर्थ: अपनी प्रशंसा स्वयं करना) - "सच्चे शूवीर युद्ध के मैदान में पराक्रम दिखाते हैं, अपने मुँह मियाँ मिट्टू नहीं बनते।"
2. **हाथों के तोते उड़ जाना:** (अर्थ: अचानक आई विपत्ति से होश उड़ जाना) - "रोशनदान से मिट्टू को उड़ता देख आदर्शवादी जगन मास्टर के हाथों के तोते उड़ गए।"
3. **घोड़े बेचकर सोना:** (अर्थ: बेफिक्र होकर गहरी नींद सोना) - "परीक्षा समाप्त होते ही रोहन सारे तनाव भूलकर घोड़े बेचकर सो गया।"
4. **भीगी बिल्ली बनना:** (अर्थ: डर के मारे सहम जाना या विवश होना) - "कक्षा में गृहकार्य न करने पर शरारती छात्र शिक्षक के सामने भीगी बिल्ली बन गया।"
5. **गधे को बाप बनाना:** (अर्थ: अपने स्वार्थ के लिए मूर्ख व्यक्ति की भी चापलूसी करना) - "आज के समय में चालाक लोग अपना काम निकालने के लिए गधे को भी बाप बना लेते हैं।"

2. ध्वन्यात्मक शब्दों से

- **फड़फड़ाहट** (पंखों के हिलने की ध्वनि): "पिंजरा खुलते ही तोते के पंखों की **फड़फड़ाहट** से सारा कमरा गूँज उठा।"
- **सरसराहट** (हवा या पत्तों की ध्वनि): "अंधेरी रात में सूखी पत्तियों की **सरसराहट** सुनकर पहरेदार सतर्क हो गया।"
- **कलकल** (नदी के जल का मधुर प्रवाह): "नदी के तट पर पानी की **कलकल** ध्वनि ध्यान लगाने के लिए अत्यंत उत्तम है।"
- **टुकुर-टुकुर** (एकटक देखने का भाव): "छोटा बच्चा अपनी माँ को कमरे से बाहर जाते देख **टुकुर-टुकुर** निहारने लगा।"

3. शब्द-युग्म

पाठ में से चनकर कुछ शब्द-युग्म नीचे दिए गए हैं। उनका अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए -

1. **वक्त-बेवक्त** (पुनरुक्त/विपरीतार्थक कोटि): "सच्चा मित्र वही है जो **वक्त-बेवक्त** आधी रात को भी आपके काम आ सके।"
2. **नियम-सिद्धांत** (समानार्थक शब्द-युग्म): "जगन मास्टर अपने उच्च **नियम-सिद्धांतों** के कारण किसी पक्षी को कैद में नहीं देख सकते थे।"
3. **शादी-ब्याह** (सजातीय शब्द-युग्म): "ग्रामीण समाजों में **शादी-ब्याह** के अवसरों पर पूरा गाँव मिलकर उत्सव मनाता है।"
4. **तीज-त्योहार** (सजातीय/समानार्थक): "भारतीय संस्कृति में **तीज-त्योहारों** का आगमन जीवन में नई उमंग और खुशियाँ लेकर आता है।"

4. खोजबीन शब्दों की

दिए गए गद्यांश अनुच्छेद के आधार पर निकाले गए प्रामाणिक व्याकरणिक अंग:

- 'तंग' का सटीक विपरीतार्थक (विलोम) **शब्द: ढीली** (धोती)
- एक वाक्यांश जो मुहावरा है: **पसीना-पसीना होना** (अत्यधिक थकना/पेशान होना)
- एक शब्द जो क्रिया (Action verb) है: **पुकारते रहे / उड़े / संभालते**
- एक शब्द जो संज्ञा (Noun) है: **बाग / पेड़ / धोती / मिठू**
- एक शब्द जो सर्वनाम (Pronoun) है: **वह / अपने**
- एक शब्द जो विशेषण (Adjective) है: **ढीली / दूसरे**
- एक शब्द जो कारक (Case marker) है: **में** (अधिकरण कारक) / **से** (अपादान)
- एक शब्द जो कर्ता (Subject) है: **वह** (जगन मास्टर के लिए) / **मिठू**

5. अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद

1. विधानवाचक वाक्य (सकारात्मक सूचना): "जगन मास्टर ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया।"
2. निषेधवाचक वाक्य (नकारात्मक/मनाही): "मिटू ने कोई हरकत नहीं की।"
3. प्रश्नवाचक वाक्य (जिज्ञासा/प्रश्न): "मिटू ! अब कैसे कटेगी? "
4. विस्मयादिबोधक वाक्य (आश्चर्य/तीव्र भाव): "अकेले मिटू क्या उड़े, आदर्शवादी जगन मास्टर के हाथों के सभी तोते उड़ गए! वो गए!! "
5. आज्ञावाचक वाक्य (आदेश/अनुरोध): "राम-राम कहो, सीताराम कहो।"
6. इच्छावाचक वाक्य (आकांक्षा/आशीर्वाद): "जीते रहो बेटा, जुग जुग जिओ! "
7. संदेहवाचक वाक्य (शंका/अनिश्चितता): "ताई के सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।"
8. संकेतवाचक वाक्य (शर्त/एक क्रिया का दूसरी पर निर्भर होना): "जब खेती-बाड़ी नहीं, कारबार नहीं, तो नौकर-चाकर किस दम पर टिकते! "

गतिविधियाँ

१. कहानी के रंग (मूक अभिनय - Mime Act)

- **योजना:** हमारी कक्षा के समूह ने कहानी की तीन मुख्य भावनाओं को बिना शब्दों के (मूक अभिनय द्वारा) मंच पर इस प्रकार प्रस्तुत किया:
 - **दुख (ताई का एकाकीपन):** एक छात्र ने ताई का रूप धरकर सूनी आँखों से खाली नाँद और घर के सूने कोनों को देखते हुए गहरी साँस ली, जिससे परिवार के पलायन का दुख झलका।
 - **स्नेह (ताई और मिटू का संबंध):** छात्र ने अदृश्य तोते को उँगलियों से पुचकारने, उसके लिए काल्पनिक कटोरी में दाल-भात रखने और उसे लाड़ से निहारने का भावुक अभिनय किया।
 - **आज़ादी (मिटू की फरारी):** एक छात्र ने तोते की भांति अपनी भुजाओं को धीरे-धीरे फैलाकर पंख तौलने और फिर अचानक झटके से खुले आसमान की ओर छलांग लगाने का जीवंत अभिनय किया, जिससे स्वतंत्रता का आनंद प्रकट हुआ।

२. पंखों की योजना (मेरी कल्पना)

- **उत्तर:** यदि मुझे मिटू की तरह सुंदर हरे पंख लगाकर उड़ने का सुनहरा अवसर मिले, तो मैं सबसे पहले भारत के उत्तर में स्थित विशाल हिमालय पर्वतों की बर्फीली चोटियों की ओर उड़ान भरूँगा। मैं वहाँ की ऊँचाइयों से प्रकृति के विहंगम दृश्य देखना चाहूँगा। इसके बाद, मैं देश के उन सुदूर और पिछड़े ग्रामीण अंचलों में जाऊँगा जहाँ आज भी कई वृद्ध दादा-दादी अकेले रहते हैं। मैं उनके आँगन के पेड़ों पर बैठकर मीठी मूक-भाषा में 'सीताराम खुश रहो' गाकर उनका अकेलापन दूर करूँगा और उनके चेहरों पर मुस्कान लाने का प्रयास करूँगा।

३. "पेट की समस्या उनके लिए कभी समस्या नहीं रही" (घरेलू महिलाओं की भोजन रुचियाँ)

- **सर्वेक्षण एवं समीक्षा:** मैंने अपने घर और पड़ोस की महिलाओं (माता जी और चाची जी) के भोजन के तौर-तरीकों का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया।
- **निष्कर्ष:** यह कड़वी सच्चाई है कि हमारे परिवेश में आज भी महिलाएँ परिवार के अन्य सदस्यों (बच्चों और पति) की पसंद और भोजन संबंधी आवश्यकताओं को सर्वोच्च प्राथमिकता देती हैं। माता जी हमेशा रसोई में

वही पकवान बनाती हैं जो परिवार को पसंद हो। वे स्वयं सबसे अंत में भोजन करती हैं और कई बार भोजन कम पड़ने पर 'मेरा पेट भरा है' या 'मेरा व्रत है' कहकर बात टाल देती हैं, ठीक वैसे ही जैसे ताई व्रत-उपवास के बहाने चौका-चूल्हा टाल जाती थीं। हमारी माता जी की पसंद का भोजन (जैसे- पारंपरिक मीठे पकवान) महीने में केवल एक या दो बार ही किसी विशेष उत्सव या त्योहार पर बनता है। हमें अपनी माताओं और घर की महिलाओं के स्वास्थ्य और उनकी भोजन संबंधी रुचियों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

मेरी पहेली

पाठ्यपुस्तक के शब्दों (तोता, ताई, कुंभ, पिंजरा, कमरा, गंगा) पर आधारित रोचक पहेलियाँ और उनके उत्तर नीचे दिए गए हैं:

- **पहेली १** : हरा-हरा है मेरा तन, लाल चोंच से भाए मन। राम-राम की रट लगाता, बागों का राजा कहलाता।
उत्तर: तोता
- **पहेली २** : सूने घर की है वह रानी, मिट्टू को सुनाती अपनी कहानी। पूत-बहू सब छोड़ गए, फिर भी हिम्मत कभी न हारी।
उत्तर: ताई
- **पहेली ३** : लोहे की सलाखें मेरी, आजादी को घेरे मेरी। कैद रहे इसमें मिट्टू सुगा, खो जाए जहाँ पंखों की फुरती।
उत्तर: पिंजरा
- **पहेली ४** : चार दीवारें छत है ऊपर, बंद करे जब जगन मास्टर। रोशनदान खुला था जिसका, तोता भागा उड़कर जिससे।
उत्तर: कमरा
- **पहेली ५** : शिव की जटा से मेरा निकास, पापों का करती हूँ मैं नासा। ताई जिसके तट पर जातीं, कुंभ-स्नान कर पुण्य कमातीं।
उत्तर: गंगा
- **पहेली ६** : बारह वर्षों में मैं आता, प्रयागराज में मेला लगाता। करोड़ों भक्त जहाँ जुट जाते, अमृत की बूँदें जहाँ पाते।
उत्तर: कुंभ

भाषा संगम






संविधान की आठवीं अनुसूची में समाहित विभिन्न भारतीय भाषाओं में 'तोता' शब्द के प्रांतीय रूप निम्नलिखित हैं:

- हिंदी / पंजाबी / उर्दू / कश्मीरी / बांग्ला: तोता / तोतुं / तोतो
- संस्कृत: शुकः
- मराठी / गुजराती / कोंकणी: पोपट / सूडो
- नेपाली: सुगा
- तमिल / मलयालम / कन्नड़: किळि / शुकम् / गिळि

- तेलुगु: चिलुक

खोजबीन

अध्याय के वैचारिक और डिजिटल संदर्भों को गहराई से समझने के लिए पाठ्यपुस्तक में दी गई प्रामाणिक कड़ियाँ (लिंक्स) निम्नलिखित हैं:

-  लेखक शेखर जोशी का साहित्यिक वृत्तचित्र:
<https://www.youtube.com/watch?v=Q0fTM4VIPGs> — कथाकार के जीवन-संघर्ष और ग्रामीण मध्यवर्गीय समाज के चित्रण की समीक्षा।
-  शेखर जोशी कथा समग्र एवं परिचय:
<https://www.youtube.com/watch?v=1LKQA85Dam0> — लेखक की अमर कृतियों (कोसी का घटवार, दाज्यू) पर परिचर्चा।
-  पक्षी जगत: तोता और उसकी प्रजातियाँ:
<https://www.youtube.com/watch?v=eSV2dzX5gyU> — भारतीय तोतों के प्राकृतिक आवास और उनके वन्य स्वभाव का वैज्ञानिक परिचय।
-  तोते को मानवीय गीत और संवाद सिखाना:
<https://www.youtube.com/watch?v=lvmwy5JeNe4> — पक्षियों की कुशाग्र बुद्धि और इंसानी भाषा को अनुकरण करने की क्षमता पर आधारित वीडियो।
-  तोते की अमर लोक-कथाएँ एवं कहानियाँ:
<https://www.youtube.com/watch?v=4UBNp3eIJjY> — पंचतंत्र और भारतीय धरोहर में तोतों के सांस्कृतिक महत्व की कहानियाँ।